विचार प्रवाह

राजनीति और धर्म का मूल जीवन का अध्यात्म हैं!

डाक्टर राममनोहर लोहिया ने कहा था राजनीति अल्पकालीन धर्म है और धर्म दीर्घकालीन राजनीति। राजनीति और धर्म ने काल के प्रवाह में जीवन को गहराई से सजाया संवारा और सतत मानव जीवन के समक्ष प्रस्तुत चुनौतियां का समाधान निकाला है। राजनीति और धर्म ने कमजोर से कमजोर परिस्थिति वाले नागरिक को भी बेहतरी के सपने देखने और अपने सपनों को साकार करने का आनंदमयी साधन प्रदान किया है।आज का अधिकांश राजनीतिक नेतृत्व और धार्मिक समूह भांति भांति के रंग रूप की पताकाएं फहराकर धर्म कर्म की इतिश्री समझने लगे है। इस तरह की ताकतें एकजुट होकर समूची दुनिया में राजनीति और धर्म के मूल स्वरूप को ही एक तरह से बदलने में लगे हैं। देश और दुनिया भर में राजनैतिक और धार्मिक नेतृत्व करने वाले अधिकांश समूहों ने राजनीति और धर्म की गहराई और मर्म को अपने मूल स्वरूप से उलट एकदम भिन्न पर लगभग पूरी तरह एक ऐसी उथली मनःस्थिति के करीब पहुंचा दिया हैं जिससे बाहर निकलना आज की दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती है।

राजनीति यानि एक तरह से सत्ताकी जोड़-तोड़ का अंधा एवं यंत्रवत खेल और धर्म यानी अध्यात्म से दूर अशांत , और अकारण लोभ लालच मय असहिष्णुता की पराकाष्ठा का अविवेकी हल्ला हो गया हैयह स्थिति या परिस्थिति तो राजनीति और धर्म की मूल अवधारणा किसी भी तरह से नहीं मानी जा सकती है। राजनीति और धर्म दोनों ही अपने मूल स्वरूप से उलट एक भिन्न स्थिति में लगभग पहुंच गए हैं। दोनों की मूल भूमिका लोक समाज की चेतना और वैचारिक सम्पन्नता को निरन्तर आगे बढ़ाने वाली होना चाहिए। पर आज के कालखंड में दोनों ही लोकसमाज मे एक तरह से प्रायः आपसी मनमुटाव , वैमनस्य और नाहक वितण्डावाद के पोषक बनते हुए आभासित होते या दिखाई पड़ते है। इसीलिए आज राजनीति और धर्म दोनों ने देश और दुनिया में जो रूप धारण कर लिया है,उससे लोक समाज एक अत्यंत जटिल यांत्रिक भुलभुलैया में निरन्तर उलझता जा रहा है। राजनीति एक तरह से यंत्रवत,अकारण उत्तेजित तथा उलजलूल बयान बाजी करने वाले अविचारशील व्यक्तिओं का एक बड़ा हिस्सा या जमावड़ा बनती जा रही है। जिसका कुल नतीजा निष्क्रिय भीड़भाड़ वाली या अकारण उत्तेजित भीड़ की मनोदशाग्रस्त अधिकांश मनुष्य वर्तमान समय में लगातार उलझते ही जा रहे है। लोकसमाज में सामान्य सहज विचार और विवेक का आग्रह लगातार क्षीण हो रहा है। मनुष्य जीवन को विवेक सम्मत तरिके से समस्या सुलझाने की प्रेरणा देना राजनीति का मूल काम है जिसे सत्ता की अंधी दौड़ में निरन्तर दौड़ती हुई राजनीतिक जमातों ने पूरी तरह उलट दिया है। धर्म पताका हवा में लहराते रहने मात्र से धर्म की आध्यात्मिक भूमिका मनुष्य के मन में स्वतः ही विकसित नहीं हो सकती।

धर्म मनुष्य के प्राकृतिक स्वरूप और मूल चेतना का जीवंत विस्तार है और आध्यात्मिक भूमिका की बुनियाद या आधारशिला है। धर्म मनुष्य जीवन की आध्यात्मिक भूमिका का निर्धारण और विस्तार करता है। धर्म एक तरह से मानव जीवन की आचार संहिता और मनुष्य मात्र के प्राकृतिक स्वरूप को व्यवस्थित रूप में जीवन के दर्शन और आचरण में उतारने का व्यवहारिक रूप स्वरूप है। एक सवाल मन में यह भी उठता है कि धर्म का धर्म क्या है? क्या धर्म मनुष्य मात्र तक ही सीमित है या धर्म समूचे जगत के लिए है। जैसे हवा का धर्म निरन्तर हर कहीं मौजूद रहना है।जल का धर्म भी किसी न किसी रूप में हर कहीं भूमि और भुवन में बने रहना है। वायु और जल किसी न किसी रूप में इस धरती पर मौजूद वातावरण और जीवन के विभिन्न रूपों में चाहे वह जीव जगत हो या वनस्पति जगत हो दोनों का अस्तित्व वायु और जल के अभाव में संभव ही नहीं है।

इसी तरह एकता और अनेकता एक दूसरे से वायु और जल की तरह ही आपस में रची-बसी है उसको एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। मनुष्य अपने आप में एक ही रूप स्वरूप में होते हुए भी अनेक रूप स्वरूप में जगत में बना रहता है। मनुष्य और वनस्पति का धर्म एक ही है जीवन की निरन्तरता को कायम रखना। क्या मनुष्य या जीव और वनस्पति के अभाव में जीवन संभव हो सकता है?अनेक जीव जन्तुओं और वनस्पति जगत के जीवन के प्रवाह से ही जीवन या जीवन की निरन्तरता बनी रहती है। तो इस तरह से सहजता से समझा जा सकता है कि अनेकता और एकता दोनों ही जीवन की निरन्तरता या प्रवाह का ही मूल रूप है हम इस अर्थ में एक और अनेक को एक दूसरे से अलग नहीं कर सकते। राजनीति और धर्म को हम खंडित रुप में देखने परखने और अनुभूत करने के कारण दोनों को मूलतः एक दूसरे से अलग ही समझने लगे हैं। दोनों ही मूलतःजीवन के मूल प्रवाह से ही जन्मे हैं और कालक्रम अनुसार एक दूसरे से लिपट कर अपने गुण धर्म को सदैव मूल रूप में कायम रखते हैं और कालक्रम में विरोधाभासी रुप से अपने मूल गुण धर्म से विचलित होते हुए आभासित होते दिखाई पड़ते हैं । राजनीति और धर्म इस जगत में जीवन की ऐसी अनोखी मानवीय गतिविधियां हैं जो जीवन काल में शांति और अशांति से परे रहकर जीवन को आध्यात्मिक साधना की दुनिया में निरंतर लेजाने का मार्ग प्रशस्त करती है। राजनीति और धर्म हमारे जीवन का क्षणिक तमाशा या कोरी हलचल न होकर इस जगत में जीवन का गहरा सनातन अध्यात्म है। जैसे जल की एक बूंद और वायु या धूल का एक कण की ताकत हमें दिखाई नहीं देती पर जगत और जीवन में जो भी कुछ घटता है वह पंचतत्व के सूक्ष्म स्वरूप के विराट साकार स्वरूप में आ जाने और पुनः मूल स्वरूप में विलीन हो जाने का अंतहीन सिलसिला ही है। राजनीति और धर्म अध्यात्म के विस्तार और संकुचित होते रहने की अनंत लहरें हैं। लहरों का आना जाना आभासी दुनिया का एक एक क्षण या कण है जिसमें जीव और जीवन रचा बसा है। यही वह मूल विचार हैं जिसे हम जीवन और जगत का अध्यात्म मान सकते हैं।

- अनिल त्रिवेदी , अभिभाषक एवं स्वतंत्र लेखक, त्रिवेदी परिसर, 304/2 भोलाराम उस्ताद मार्ग ग्राम पिपल्या राव, आगरा मुम्बई राजमार्ग इन्दौर म.प्र.

कार्टून कोना

किस्से का सिरा भाग - 59

इंदौर का हृदय : गीता भवन आस्था, सेवा और स्मृतियों का संगम

इंदौर की पहचान केवल उसकी चौड़ी सड़कों या मिलों के इतिहास से नहीं है, बल्कि उस गीता भवन से भी है, जिसे इंदौर का दूसरा नाम कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। संयोगितागंज क्षेत्र के हृदय में स्थित गीता भवन केवल एक भवन नहीं, बल्कि शहर की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का एक जीवंत केंद्र है।

स्मृतियों के पन्नों में- पलासिया से गीता भवन तक का सफर

गीता भवन की बात करते ही मेरे मन में मेरे बचपन की वे मीठी यादें ताजा हो जाती हैं, जब मैं अपनी माता जी के साथ यहाँ आया करता था। हमारा पुराना घर पलासिया में था, और वहाँ से गीता भवन की लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी हम पैदल ही तय किया करते थे।

विशेष रूप से गीता जयंती के पावन अवसर पर, वह डेढ़ किलोमीटर का रास्ता मानो भक्ति के एक प्रवाह में बदल जाता था। माता जी के साथ उन भजनों, कीर्तनों, कथाओं और सत्संगों में बैठना न केवल मेरे बाल मन को शांति देता था, बल्कि जीवन के उन नैतिक मूल्यों की नींव भी वहीं रखी गई थी। आज भी जब मैं गीता भवन के पास से गुजरता हूँ, तो उस दौर की गूँजती हुई शंखध्वनियाँ और माता जी के भजन विताए वे पल मेरी आँखों के सामने जीवंत हो उठते हैं।

आस्था और सेवा का केंद्र

गीता भवन की असली पहचान इसकी जनकल्याणकारी संस्थाओं में निहित है। यहाँ स्थित गीता भवन ट्रस्ट और उससे जुड़ी चिकित्सा व शैक्षणिक संस्थाएं अभावग्रस्त लोगों के लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। जिस प्रकार फेल की तंग गलियों से निकले छात्रों ने अभावों को मात दी, उसी प्रकार गीता भवन का सेवा-प्रकल्प समाज के हर उस व्यक्ति के लिए सहारा बनकर खड़ा रहा है।

आधुनिकता के दौर में भी अडिग

आज जब शहर तेजी से बदल रहा है और आधुनिकता की दौड़ में आगे बढ़ रहा है, गीता भवन अपनी मौलिकता और गरिमा के साथ आज भी अडिग खड़ा है। यह उन लोगों का आश्रय स्थल है जो आध्यात्मिकता की शांति ढूँढते हैं। गीता भवन ने समय के हर थपेड़े को सहे है और शहर को एकसूत्र में पिरोकर रखा है।

भावपूर्ण समापन

गीता भवन केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि इंदौर की उस तहजीब का आईना है जो सिखाती है कि प्रगति के साथ परंपराओं का निर्वहन कैसे किया जाता है। यदि गोमा की फेल और पंचम की फेल संघर्ष का पर्याय हैं, तो गीता भवन उस संघर्ष को दिशा देने वाली आध्यात्मिक ऊर्जा है।

यह स्थान हमें याद दिलाता है कि हम चाहे कितनी भी ऊँचाइयों पर क्यों न पहुँच जाएं, अपनी जड़ों और माता-पिता के साथ बिताए वे संस्कारित पल ही जीवन की असली सफलता हैं।

- राजेश निगम म. प्र. प्रदेशाध्यक्ष,, भारतीय पत्रकार सुरक्षा परिषद

14 जुलाई को छात्रों का महाआंदोलन, काक्रोच पार्टी के अभिजीत दीपके होंगे शामिल

कलेक्ट्रेट तक रैली निकाल करेंगे घेराव

इन्दौर (ई) विगत कई दिनों से भंवरकुआं स्थित टंट्याभील चौराहे पर नीट पेपर लीक मामले सहित अपनी 23 सूत्रीय मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन कर रहे छात्रों ने अब 14 जुलाई को महाआंदोलन की तैयारी की हैं जिसके तहत वे रैली निकाल कलेक्टर कार्यालय का घेराव करेंगे।

छात्रों के इस महाआंदोलन को काँकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का भी समर्थन मिल गया है। पार्टी के प्रमुख अभिजीत दीपके ने वीडियो कॉल के माध्यम से आंदोलनरत छात्रों से बात की और 14 जुलाई के महाआंदोलन में शामिल होने की संभावना जताई। धरने पर बैठे छात्र अरुण बड़ोले सहित अन्य छात्रों ने काँकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रमुख अभिजीत दीपके से वीडियो कॉल पर बातचीत की। इस दौरान उन्होंने आंदोलन की पूरी जानकारी ली और छात्रों को अपना समर्थन दिया। उन्होंने आंदोलन की वर्तमान स्थिति, छात्रों का हालचाल जाना तथा उनके साहस और एकजुटता की सराहना की। आंदोलनकारी छात्र पवन अहिरवार के अनुसार वीडियो कॉल के दौरान अभिजीत दीपके ने कहा कि वे छात्रों की न्यायसंगत मांगों का पूरा समर्थन करते हैं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि 14 जुलाई को इंदौर में होने वाले महाआंदोलन में उनके शामिल होने की पूरी संभावना है और वे आंदोलन को सहयोग देंगे। आंदोलनकारी छात्रों ने उनका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि देशभर से मिल रहा समर्थन उनके मनोबल को और मजबूत कर रहा है। उन्होंने छात्र-युवाओं और सामाजिक संगठनों से 14 जुलाई के महाआंदोलन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर छात्रों की आवाज बुलंद करने की अपील की। इस प्रस्तावित महाआंदोलन की जानकारी देते पवन अहिरवार ने कहा कि 14 जुलाई को सुबह 11 बजे टंट्या भील चौराहे से कलेक्टर कार्यालय तक रैली निकाली जाएगी और कलेक्टर कार्यालय का घेराव किया जाएगा।

वृक्षों के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता

उपयोगितावादी दृष्टिकोण: लेख में कहा गया है कि आज हम पेड़ केवल अपने स्वार्थ, अल्पकालिक लाभ या पर्यावरण (ग्लोबल वार्मिंग, बाढ़ नियंत्रण, वायु गुणवत्ता आदि) को बचाने के लिए लगाते हैं। यह एक 'उपभोग' या 'उपयोगिता' (Utility) का दृष्टिकोण है।

दिव्य दृष्टिकोण (उपासना): लेख में श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 10, श्लोक 26) का संदर्भ दिया गया है जहाँ भगवान कहते हैं, 'वृक्षों में पवित्र पीपल (अश्वत्थ) उनकी विभूति है।' जब भगवान हर वृक्ष में हैं, तो उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण केवल उपयोग का नहीं बल्कि 'उपासना' और सम्मान का होना चाहिए।

'वृक्षमंदिर' का अनोखा प्रयोग : दादाजी ने इस विचार को व्यवहार में उतारने के लिए 'वृक्षमंदिर' नामक एक अद्भुत प्रयोग शुरू किया।

यह एक ऐसा मंदिर है जिसकी न कोई दीवारें हैं और न ही कोई मूर्तियाँ, बल्कि यहाँ चारों ओर केवल वृक्ष ही वृक्ष हैं।

निःस्वार्थ सेवाः आस-पास के लगभग 20 गाँवों के लोग (स्वाध्यायी) बारी-बारी से रोज़ यहाँ आते हैं और खुद को मालिक या मजदूर न मानकर, भगवान के 'पुजारी' के रूप में इन वृक्षों और पौधों की निःस्वार्थ भाव से देखभाल करते हैं।

'माधव-वृंद' प्रयोग (पौधों का संगोपन) : लेख के अंतिम हिस्से में (जो हाथ से थोड़ा ढका हुआ है) 'माधव-वृंद' या पौधों के पालन-पोषण के एक और प्रयोग का उल्लेख है।

इसके तहत दादाजी के जन्मदिन (अक्टूबर में मनुष्य गौरव दिन) या दीदीजी (धनश्री ताई) के मार्गदर्शन में लोग पौधों को अपने घरों में लाते हैं और 100 दिनों तक उन्हें अत्यंत स्नेह से पालते हैं। जब वे पौधे बड़े और मजबूत हो जाते हैं, तो उन्हें किसी बड़े या स्थायी स्थान पर रोपित (कर दिया जाता है।

यह लेख पूरी तरह से इस बात पर जोर देता है कि पर्यावरण की रक्षा केवल नारों या कानूनी दबाव से नहीं, बल्कि प्रकृति को भगवान का रूप मानकर उसके प्रति आंतरिक कृतज्ञता और भक्ति का भाव जगाने से ही संभव है। प्रकृति से आत्मीयता का संबंधः पर्यावरण संरक्षण का एक व्यावहारिक और आध्यात्मिक मार्ग।

- डॉ. अजय शुक्ला

चंद्रशेखर वर्मा टोली द्वारा लिखित गौ चालीसा का विमोचन किया

इन्दौर (ई) विधानसभा क्षेत्र क्रमांक पांच के विधायक महेंद्र हार्डिया द्वारा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के अवसर पर चंद्रशेखर वर्मा टोली द्वारा लिखित 33 कोटि देवी-देवताओं की गौ चालीसा का विमोचन किया गया। इस अवसर पर महापौर पुष्पमित्र भार्गव, विधायक रमेश मेंदोला, मधु वर्मा, नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा, एमआइसी सदस्य राजेश उदावत सहित कई जनप्रतिनिधि मौजूद रहें।

इको पार्क, उमरी खेड़ा, खंडवा रोड पर वृक्षारोपण

इन्दौर। यूथ होस्टल एसोसिएशन ऑफ इंडिया इंदौर इकाई एवं ईश कृपा मित्र मंडलके द्वारा इको पार्क ,उमरी खेड़ा ,खंडवा रोड पर वृक्षारोपण , ट्रैकिंग ,जल संरक्षण , बरसात के पानी के रिचार्ज ,वृक्षों के संरक्षण एवं पशु पक्षी से संबंधित ज्ञान एवं उनके संरक्षण से संबंधित एक इवेंट का आयोजन किया गया जिसमे सभी सदस्यों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया एवं प्रकृति एवं वृक्षों के बचाव , पानी के रिचार्ज एवं जीव दया, जन जागृति के माध्यम से इस पर अन्य लोगों प्रेरित करने की प्रेरणा की शपथ ली गई । कार्यक्रम पूर्ण रूप से सामाजिक एवं पारिवारिक माहौल के साथ बनाया गया एवं लड़कियों एवं महिलाओं को विधर्मी से दूर रहने एवं उनकी रक्षा के लिए आवश्यक कार्य एवं बचाव की शपथ दिलाई गई । अंत राष्ट्र के निर्माण के लिए अपना योगदान देने एवं राष्ट्रीय गान के बाद कार्यक्रम का समापन किया गया .इस वावय के साथ पुनः जल्दी मिलेंगे -जय हिंद ,वंदे मातरम् ये आयोजन सफल बनाने मे सर्वश्री आनंद भावे, वैद्यजी, संघवी ललित,रमेश मौर्या भरत, पीयूष, एवं कई गण मान्य महिला एवं नागरिको ने हिस्सा लिया ।

- फिशिंग, फर्जी जॉब ऑफर, शेयर मार्केट, डिजिटल अरेस्ट है मुख्य हथियार

लगातार बढ़ता जा रहा है सायबर ठगी की घटनाओं का आंकड़ा

>> प्रदेश में रोजाना 190 लोग बन रहे ठगोरो का शिकार

>> हर घंटे 8 ठगी की वारदाते आ रही है सामने

>> महानगरो से गाँवो तक में हो रही है सायबर ठगी

>> पुलिस लगातार कर रही जागरुकता फैलाने के प्रयास

इन्दौर। इंटरनेट के जरिये बैंकिंग के साथ ही एप और मोबाइल से ट्रांजेक्शन की सुविधा के साथ ही ऑनलाइन जालसाजी के मामले भी तेजी से बढ़ रहे हैं। बताया जा रहा है कि जालसाज अलग-अलग तरीको से एमपी में प्रतिदिन लगभग 190 लोगो को अपना निशाना बनाकर रकम ऐंठ रहे है, यानि हर घंटे साइबर ठगी के आठ मामले सामने आ रहे हैं।

आंकड़ो पर नजर डाली जाये तो साल 2025 में के शुरुआती छह महीनों में ही 34 हजार से अधिक साइबर फ्रॉड के मामले सामने आए हैं, यह आंकड़ा वर्ष 2021 में दर्ज हुए 13768 मामलो की तुलना में कई गुना ज्यादा है। आंकड़ो से साफ है की साल 2021 से अब 2025 तक साइबर ठगी की घटनाए तेज रफ्तार से लगातार बढ़ती जा रही है। रिपोर्ट के अनुसार साल 2022 में सायबर जालसाज के 26053 साल 2023 में 52846 और वर्ष 2024 में 68,58 मामले सामने आए थे। वहीं 2025 में जनवरी से जून महीने तक ही 34 हजार से अधिक एफआईआर दर्ज की जा चुकी हैं, अनुमान है कि साल के अंत तक इनकी संख्या बीते सालो से काफी अधिक हो सकती हैं। ये वे मामले हैं, जिनको जानकारी केंद्रीय गृह मंत्रालय की और से दी गई है।

- फिशिंग, फर्जी जॉब ऑफर, शेयर मार्केट, डिजिटल अरेस्ट है मुख्य हथियार

सायबर ठग फिशिंग, ओटीपी स्कैम, फर्जी जॉब ऑफर, शेयर मार्केट, निवेश घोटाले, डिजिटल अरेस्ट, बिजली बिल पेमेंट, आधार या बैंक खाते में मोबाइल नंबर अपडेट के साथ ही सोशल मीडिया से जुड़े अन्य मामलो को लेकर ठगी करते है।

- महानगरो से गाँवो तक में हो रही है सायबर ठगी

सामने आ रही सायबर ठगी की घटनाओ से साफ है की जालसाज महानगरों से लेकर गाँवो तक में ठगी कर रहे हैं। इन घटनाओ पर अंकुश लगाने समय रहते कार्यवाही करने या जल्द जाँच कर आरोपियो पकड़ने वाले राज्य साइबर सेल के सामने सबसे बड़ी चुनौती या चिंताजनक बात यह है, कि इन मामलों की पड़ताल के लिये ट्रेड अधिकारी बहुत कम हैं। स्टाफ कम होने के कारण जाँच टीमो पर श्रमता से अधिक शिकायतों की जांच का बोझ डला गया हैं।

- विभाग लगातार कर रहा है जागरुकता फैलाने के प्रयास

सायबर सेल द्वारा समय-समय पर या नये तरह का स्कैम सामने आने पर एडवाइजरी के साथ ही आमजन के बीच पहुचंकर उन्हें ठगो से बचने के लिये जागरुक करने के लगातार प्रयास किये जाते है। बीते दिनो की सेफक्लिक 2.0 अभियान के तहत लगातार कार्यक्रम आयोजित किये गये थे। एडवायजरी में विभाग द्वारा चेतावनी दी जाती है की लोग कभी भी अपने ओटीपी, बैंक डिटेल्स, यूपीआई पिन या निजी डिटेल किसी से शेयर न करें। इसके अलावा अनजान लिंक पर क्लिक न करने, फर्जी कॉल्स और वीडियो कॉल्स से सावधान रहने और किसी भी तरह का शक या ठगी होने पर हेल्पलाइन नंबर 1930 और साइबर क्राइम वेबसाइट पर शिकायतें दर्ज करने की सलाह देती है। लेकिन इसके बाद भी बेहद शातिर ठग लोगों को अपने जाल में फंसाकर रकम ठग लेते हैं।